धरो मानव का रूप

राधाकांत मिश्र

लोग कहते हैं पता नहीं,
तुम कहाँ-कहाँ रहते हो,
मुझे पता है प्रभो ! लेकिन
तुम जहाँ जहाँ बसते हो ।

लोग ढूँढ़ते हैं तुम्हें जाकर
मन्दिर औ' मस्जिदों में ।
पर मैं देखता तुम्हें सदा ही
विद्यालय अस्पतालों में ।

पता नहीं लोग मंदिर जाकर
क्या प्रसाद ले आते हैं ।
हर रोज स्कूल में गुरु मुझे तो
विद्यामृत पिलाते हैं ।

पता नहीं लोग तुमसे क्या-क्या
माँगकर ले आते हैं
घर में जो माँगूँ मुझे सो
माता-पिता देते हैं ।

हो बीमार कभी भागा-भागा
जा पहुँचता अस्पताल,
नर्स डॉक्टर बन बैठे तुम
हो सेवारत बेहाल ।

नहीं जानता कौन तुम्हारे
पराये हैं कौन अपने
निश्छल निर्मल प्यार करते
मुझसे साथी अपने ।

देखता हूँ जब कोई दयालु
करता गरीब को दान,
झलक जाता इन आँखों में
तुम्हारा रूप भगवान !

तुम हो मेरे मातापिता सब
मेरे गुरु और सखा
अधिक नहीं, दे देना उतना
जो मैंने है रखा ।

जहाँ जहाँ जाऊँ देखता
रहूँ तुम्हें सुरभूप,
माँगूँ बस इतना प्रभो तुम
धरो मानव का रूप ।

❖ ❖ ❖

शब्द-अर्थ

पता - ठिकाना;

अस्पताल - चिकित्सालय;

निश्छल - जो छल कपट न जानता हो, सरल प्रकृति का;

निर्मल - शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ;

दयालु - दया करनेवाला,

झलक - चमक;

सुर-भूप - देवताओं का राजा, भगवान।

अनुशीलनी

१. समझो और लिखो :

(i) लोग भगवान को कहाँ कहाँ ढूँढ़ते हैं ?

(ii) कवि ईश्वर को कहाँ देखते हैं ?

(iii) स्कूल में गुरु हमें क्या पिलाते हैं ?

(iv) घर में हमारी माँग कौन पूरा करता है ?

(v) ईश्वर का रूप कवि की आँखों में कब झलक जाता है ?

(vi) ईश्वर से कवि क्या याचना करते हैं ?

२. पढ़ो और अधूरी पंक्तियों को पूरा करो :

(i) लोग कहते हैं .....

तुम कहाँ कहाँ रहते हो ।

.....पता है प्रभो ! लेकिन

तुम जहाँ ..... ।

(ii) घर में जो माँगू.....
माता पिता ..... ।

(iii) ..... कोई-दयालु
करता .....
.....इन आँखों में
..... भगवान ।

३. प्रस्तुत कविता के ३, ५ और ७ छंदों के भावार्थ लिखो ।

४. नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :

विद्यालय :

बीमार :

मंदिर :

दयालु :

५. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो :

गुरु :

ईश्वर :

माता :

पिता :

स्कूल :

६. याद रखो : भगवान वहाँ मिलते हैं जहाँ मानव में स्नेह, प्रेम, सेवा, दया आदि का भाव होता है ।

❖ ❖ ❖